विपर्यय

नवल युग

जिस जीवन का करते हम प्रमुदित अभिनन्दन |

है यथार्थ में पीड़ादायक ही दृढ़ बन्धन |

जिसमे हर प्रमोद का अनुगन्ता कटुक्रन्दन |

हर क्षण करता आयु कुसुम का क्रमश: कृन्तन || 1

मुक्त हास असहिष्णु काल लगता है जग में |

पुष्प दिखाकर, तीक्ष्ण डालता कण्टक मग में |

जिसको कहते सुपथ भरा है अवरोधों से |

करता कुपथ निमंत्रित बहुश: अनुरोधों से || 2

अज्ञानी निश्चिंत मग्न चिन्ता में बुध जन |

भीत धर्म पर यहाँ मूढ़ का निर्भय दृढ़ मन |

असतशीशसकिरीट ठोकरें खाता सत है |

नीति विपर्यय असन्देह, कलियुग अभिमत है || 3

विद्यावान विपन्न अविद्या मण्डित मण्डित |

खण्डित मान व्दिजाति दुष्ट दल सबल अदण्डित |

विकृति युक्त मन फैलाता नित नवल जाल है |

कितनी ही अबलाओं का सकलंक भाल है || 4

मर्यादाएँ आज लग रहीं हैं कटु बन्धन |

और वर्जनाएँ लगती व्यक्तित्व विखण्डन |

स्वैर आचरण आज आधुनिकता का ज्ञापक |

पुष्कल धन संग्रहण सफलता का परिमापक || 5

पर निन्दा, आक्षेप, मृषा भाषण, आडम्बर |

भयगोपन कुप्रयास ओढ़ विषहत बाघम्बर |

तुच्छ हेतु भी त्याज्य हुआ लज्जा अवगुण्ठन |

दंशित विवश सतीत्व करे शय्या पर लुण्ठन || 6

देहाकर्षण मात्र प्रणय का स्त्रोत सुपोषक |

प्रणयी ही बन रहा प्राणघाती वपु शोषक |

विवश भावना हुई घूर्तता छल जय पाते |

आश्रमस्थ भी अबला को देखा पछताते || 7

नरता का क्या मोल वस्तुएं ही अभिवंदित |

त्यक्त सकल सम्बन्ध यंत्र में नर आनंदित |

यंत्रों में विश्वास व्यग्र नर ढूँढ़ रहा है |

क्योंकि नित्य प्रति मनुज मनुज को मूड़ रहा है || 8

निज सुख अन्वेषणरत है प्रज्ञा अब सारी ।

न्यस्त सकल सिद्धांत सफलता का अधिकारी ।

ऋजुता है उपहास्य गुणी पाता अवहेला ।

कुशल नहीं जो लगा सके बातों का मेला ॥ 9

पूजित हुआ असार सार ठोकर खाता है ।

कोकिल वैठी मूक काक प्रमुदित गाता है ।

दुराचरण संलग्न रुचिर प्रवचन करते हैं ।

श्रद्धा अब व्यापार मान, धन, असु, हरते है ॥ 10

असहज हुआ मनुष्य महत्वाकांक्षी होकर ।

स्वप्न भार चलता निर्बल कन्धों पर ढोकर ।

नहीं तितिक्षा शेष स्वप्न भंजन सहने की ।

गयी कला सामान्य मनुज बन कर रहने की ॥ 11

है क्या यही नवल युग जिसमें हैं सुविधाएं ।

अर्जन की जो सिखा रहा है विविध विधाएं ।

किन्तु लुप्त है कला सफल जीवन जीने की ।

वारुणि नहीं ! सुधा को पाने की पीने की ॥ 12

जबलपुर 02/06/2016 - 15/01/2018 शिव कुमार मिश्र